ओदोलेन स्मेकल

जन्म	:	18 अगस्त 1928 ।
जन्म-स्थान	:	ओलोमोउत्स नगर से सटा गाँव लोशोव, चेकोस्लोवाकिया, यूरोप ।
शिक्षा	:	चेकोस्लोवाकिया की राजधानी में, प्राहा के चार्ल्स विश्वविद्यालय से हिंदी में एम० ए० तथा पीएच० डी० । वहीं से लोक साहित्य, ग्राम उपन्यास तथा अनुकरणात्मक शब्दों पर शोध ।
शिक्षण	:	कई वर्षों तक प्राहा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक । दस से अधिक वर्षों तक अपने देश के भारत विद्या विभागाध्यक्ष के पद पर ।
यात्राएँ	:	संसार के अनेक देशों तथा भारत की कई बार सांस्कृतिक यात्राएँ, भारत के अनेक विशिष्ट व्यक्तियों, हिंदी लेखकों, कवियों तथा राजनेताओं से प्रत्यक्ष संपर्क ।
सम्मान	:	भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी पुरस्कार (1979) से सम्मानित।
अन्य गतिविधियाँ	:	प्रथम तथा द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलनों में सक्रिय सहयोग ।
विशेष	:	भारत में चेकोस्लोवाकिया के राजदूत पद पर सेवाएँ, बहुभाषाविद्, धर्म-संस्कृति में विशेष अभिरुचि ।
रचनाएँ	:	प्रेमचंद का गोदान, आधुनिक हिंदी कविता का संकलन, भारतीय लोककथाएँ, भारत के नवरूप, ये देवता कहाँ से आए (निबंध), तेरे दान किए गीत, नमो नमो भारत माता (कविता संकलन), इसके अतिरिक्त चेक से हिंदी एवं हिंदी से चेक भाषाओं में अनेक अनुवाद ।

ओदोलेन स्मेकल भारत विद्याविद् यूरोपीय विद्वानों की परंपरा की एक आधुनिक कड़ी थे । उनकी विशेष अभिरुचि का विषय था – आधुनिक भारत । स्वभावत: आधुनिक भारत प्राचीन भारत का ही विकसित रूप है, अत: उसे उसके समृद्ध स्वर्णिम अतीत से काटकर नहीं समझा जा सकता । स्मेकल इस सच्चाई को समझ रहे थे । हिंदी भाषा और साहित्य से वे शैक्षणिक तथा रुचिगत धरातल पर जुड़े हुए थे । भारत को जानने का प्रधान माध्यम उनके लिए हिंदी ही थी, किंतु वे इस बहुभाषी-बहुजातीय राष्ट्र की दूसरी भाषाओं और क्षेत्रीय सांस्कृतिक विविधताओं की ओर से कभी भी उदासीन नहीं रहे । उनके भीतर इस देश को गहराई से जानने-समझने की उत्कट लालसा थी जिसकी अभिव्यक्ति उनकी कविताओं और निबंधों में होती है । इसी प्रक्रिया में उन्होंने भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रतीकों का अध्ययन अंतिम दिनों में करना शुरू किया था । यह अध्ययन महज सूत्रनात्मक और सतही नहीं था, उसमें ज्ञेय तत्त्वों को अनुभव प्रत्यक्ष करने की अभीप्सा

थी । प्रस्तुत पाठ उनकी निधनोत्तर प्रकाशित पुस्तक 'कहाँ से आए देवता' से लिया गया है । पूरी पुस्तक भारतीय धर्म प्रतीकों को लेकर ही विशेष रूप से लिखी गई है । पुस्तक का हर अध्याय उनके गहन शोध और सूक्ष्म जिज्ञासा को प्रमाणित करता है । प्रस्तुत पाठ में 'सूर्य' को लेकर, जिसकी भारत में पूजा-उपासना की जाती रही है, भारतीय धर्म के साथ-साथ तुलनात्मक रूप में संसार के अन्य प्राचीन धर्मों और समाज-संस्कृतियों का भी प्रासंगिक पर्यवेक्षण किया गया है । [redacted]-संस्कृतियों एवं धर्मों में भी पूजित सूर्य के इस अध्ययन से भारतीय पूजा-उपासना की [redacted]भौमिकता पर भी प्रकाश पड़ता है ।

◆ ◆ ◆

बिहार दर्पण

बता तो कुसुमपुर के माली
कितनी दूर जनक की मिथिला
कितनी दूर वैशाली ?

ओ भगिनी
लगता है जंगल में मंगल मनाया
कि राह भूल गई
या गार्गी और मैत्रेयी से
न्याय पर शास्त्रार्थ किया ?

नहीं, नहीं ओ कुसुमपुर के माली
अपनी राह से पहले
अशोक स्तंभों की भीड़ में
फिर राजगृह के स्वर्ण भंडार में
भटक गई

ओ विदुषी
विहारों के देश में
कौन भटक न जाए—
सम्राट अशोक के समान !
गौतम बुद्ध का मगध महान !

(नमो नमो भारतमाता)
—ओदोलेन स्मेकल

सूर्य

वहाँ वह सूर्य है जो चमकता है । तो सूर्य आखिर है क्या ? वेदों में इसे एक पहिएवाले सुनहरे रथ पर सवार देवता कहा गया है, जिसे सात शक्तिशाली घोड़े पलक झपकते ही 364 लीग की रफ्तार से दौड़ा कर ले जाते हैं । वह अपने रथ पर सवार होकर आसमान में घूमता रहता है और संसार की हर गतिविधि पर नजर रखता है ।

किसने इसे बनाया, जिस पर धरती पर मौजूद जीवन पूरी तरह से निर्भर है ? क्या यह मरता हुआ विशाल तारा है या कोई वैज्ञानिक चमत्कार या वाकई सूर्य देवता है जो वेदों की साकार आत्मा है और जो त्रिदेव का प्रतिनिधित्व करता है–दिन में ब्रह्मा, दोपहर में शिव और शाम में विष्णु ।

भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार सूर्य के माता-पिता थे अदिति और कश्यप । अदिति के आठ बच्चे थे । आठवाँ बच्चा अंडे की शक्ल का था । इसलिए उसका नाम रखा मार्तंड यानी मृत अंडे का पुत्र और उसका परित्याग कर दिया । वह आसमान में चला गया और खुद को वहाँ महिमामंडित कर लिया ।

दूसरा किस्सा यह है कि अदिति ने एक बार अपने पहले सात पुत्रों से कहा कि वे ब्रह्मांड का सृजन करें । किंतु वे इसमें असमर्थ रहे । क्योंकि वे सिर्फ जन्म को जानते थे, मृत्यु को नहीं। जीवन चक्र स्थापित करने के लिए अमरत्व की जरूरत नहीं थी, सो अदिति ने मार्तंड से कहा। उन्होंने फौरन दिन और रात का सृजन कर दिया जो जीवन और मृत्यु के प्रतीक थे ।

यह घटना भी प्रतीकात्मक है । अदिति का अर्थ है अखंडित । ऋग्वेद में अदिति के लिए अद्वय और सदावृध' शब्दों का भी इस्तेमाल हुआ है । अद्वय का अर्थ है जो दो न हो और सदावृध का अर्थ है जो सदा बढ़ता रहे ।

इनका विवाह विश्वकर्मा की पुत्री सख्यु या संज्ञा से हुआ, जिनसे इन्हें तीन बच्चे हुए–मनु वैवस्वत (सूर्यवंश के संस्थापक), यम (मृत्यु का देवता) और यमुना (नदी) । किंतु सूर्य का तेज संज्ञा की बर्दाश्त के बाहर था । इसलिए उसने अपनी छाया को सूर्य के पास छोड़ दिया और अश्विनी यानी घोड़ी का रूप धर कर तप करने चली गई ।

लंबे अर्से तक छाया ने संज्ञा के छद्म रूप का बखूबी अभिनय किया लेकिन अंत में उसका भेद खुल ही गया। छाया से उन्हें शनि, सावर्णि मनु और तपत्ति नामक पुत्र उत्पन्न हुए।

ये सूर्य के सात घोड़ों वाले रथ को हाँकते हैं । सूर्य के सारथि का नाम है अरुण । संज्ञा के प्रेम में पागल सूर्य उसे सारे ब्रह्मांड में ढूँढ़ते रहे । सूर्य ने अश्व का रूप धारण किया और उनके पास पहुँच गए । संज्ञा के उनसे दो बच्चे हुए जिन्हें अश्विनी कुमार कहा जाता है—एक का नाम नासत्य और दूसरे का दस्र है ।

उधर विश्वकर्मा ने सूर्य की आभा के अंश को काट डाला और उससे विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल, यम का दंड, स्कंद का भाला और कुबेर की गदा तैयार की । विष्णु के सातवें अवतार थे राम, जिनका जन्म सूर्यवंश में हुआ था ।

सूर्य की पूजा बारहों महीने होती है । हर महीने में उनका अलग नाम है । चैत्र में धाता, वैशाख में अर्यमा, ज्येष्ठ में मित्र, आषाढ़ में वरुण, श्रावण में इंद्र, भाद्रपद में विवस्वान, आश्विन में पूषा, कार्तिक में क्रतु, मार्गशीर्ष में अंशु, पौष में भग, माघ में त्वष्टा और फाल्गुन में विष्णु ।

सूर्य के कई काम हैं और हर काम पर उनका अलग नाम है । सविता के रूप में वे हर वस्तु को उत्प्रेरित करते हैं । पूषण के रूप में कल्याण करते हैं । उगता सूर्य वैवस्वत कहलाता है । जबकि भग उनका दुष्ट रूप है ।

कहते हैं कि याज्ञवल्क्य ऋषि ने सीधे सूर्य से ही वेद की शिक्षा ग्रहण की थी । अरुणाचल प्रदेश की एक जनजाति सूर्य की ही पूजा करती है और उसे स्त्री मानती है क्योंकि वही सृजन का स्रोत है ।

सूर्य की आराधना कई तरह से की जाती है । उसे जाग्रत करने के लिए कई तरह के प्रतीकों का भी इस्तेमाल किया जाता है । गरुड़ को सूर्य मानकर उसकी पूजा की जाती है क्योंकि वह साँप का शिकार करता है । साँप यानी अंधकार । गरुड़ उसे खा जाता है । सूर्य अंधकार को खा जाता है । इसलिए गरुड़ सूर्य का प्रतीक हुआ । खिले हुए कमल को भी सूर्य समझा जाता है । लेकिन सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतीक है स्वस्तिक, जो कि किसी-न-किसी रूप में सारी दुनिया में पूजित है । भारत में कई सूर्य मंदिर हैं, जिनमें कोणार्क का सूर्य मंदिर मशहूर है ।

लगता है इंसान में चेतना जागने के साथ-साथ सूर्य की उपासना भी शुरू हो गई । प्राचीन मिस्र, बेबीलोन, ईरान या ग्रीक रोमन सभ्यता—सभी में सूर्य देवता पूजे जाते थे ।

सन् 1925 में सर जेम्ज जी० फ्रेजर ने 'प्राचीन आर्यों की सूर्य पूजा' नामक अपनी पुस्तक में साबित कर दिया था कि जहाँ कहीं भी आर्य गए अपने साथ सूर्य पूजा को भी लेते गए ।

प्राचीन मिस्र में तो सूर्य को जबर्दस्त प्रतिष्ठा हासिल थी । पूर्वोन्मुख स्फिंक्स उगते सूर्य का प्रतीक है, जिसे हर्माकुस या होरूस कहा जाता था । फारस के लोग सूर्य को मिथरा कहते थे, जो सुरक्षा, प्रसन्नता, दया, विजय और दुख हरता था । ई० पू० पाँचवीं सदी में यह फारस के लोगों का मुख्य देवता बन गया था । धीरे-धीरे मध्यपूर्व से यूरोप तक मिथराई धर्म फैल गया । रोम साम्राज्य का यही मुख्य धर्म था ।

असीरियाई, आकेदी, फिनिशियाई, ग्रीक और रोमन लोगों के भी मुख्य देवता सूर्य ही थे।

असीरियाई उसे मीरोदाक, आकेदी उसे बाआई, फिनिशियाई उसे अपोलो कहते थे ।

मैक्समूलर ने लिखा है कि वैदिक ऋचाओं में धीरे-धीरे सूर्य के प्रकाशमान तारा से बदलकर सर्जक, संरक्षक और शासक में तब्दील हो जाने के क्रमश: विकास को देखा जा सकता है । सूर्य सब कुछ देखता और जानता है, इसलिए उससे आग्रह किया जाता है कि जो कुछ सिर्फ उसने देखा और जाना है उसे क्षमा करके भूल जाए । वह चाहे इंद्र हो या वरुण, सावित्री या द्यौ । आज हमें जो कविता लगती है वह वैदिक भारत का गद्य था । होमर ने भी सूर्य देवता को देवताओं का हाईपीरीअन पिता कहा था, जिसने अपनी बहन थीआ से विवाह किया था । अफ्रीका में हमेशा से सूर्य पूजा होती आई है । मेक्सिको और पेरू में स्पेनियों ने सूर्य पूजक संप्रदायों को देखा था ।

'जेंद अवेस्ता' में सूर्य को 'हवर' कहा गया है जो संस्कृत शब्द 'स्वर' का फारसी समरूप है । सूर्य के लिए ग्रीक शब्द है 'हीलीऔस' जो इसी मूल से आया है । सूर्य को अहुरमज्दा की आँख और तेज घोड़ा कहा गया है – ''जब सूर्य उगता है, अहुर द्वारा बनाई गई धरती और बहता पानी, कुओं का पानी, समुद्र का पानी और स्थिर पानी सभी निर्मल हो जाते हैं .....''।

प्राचीन ग्रीक भी मानते थे कि सूर्य देव हीलीऔस आसमान में तेज घोड़ों से चलनेवाले अपने स्वर्ण रथ पर सवार होकर घूमते रहते हैं । वैसे प्राचीन और आधुनिक काल में ग्रीक देवता अपोलो को सूर्य देवता माना जाता रहा है ।

सर जेम्ज जी० फ्रेजर के अनुसार सूर्य की उपासना मूल आर्य धर्म में प्रमुखता से होती थी । मिथरावादी मानते थे कि सूर्य के रथ को चार घोड़े चलाते हैं ।

रोम सम्राट औरीलिया ने पूर्व की विद्रोही रानी जीनोंबिआ को परास्त करके बंदी बना लिया तो उसकी खूबसूरत राजधानी पामीरा को तो ध्वस्त कर दिया गया लेकिन वहाँ के सूर्य मंदिर को आलीशान बनवा दिया। क्योंकि 'सूर्य देव अजेय हैं ।'

ईसाई धर्म ने मिथराइयों की धार्मिक अवधारणाओं को अमान्य घोषित किया । किंतु उनसे बहुत कुछ लिया भी, जैसे 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाना । पहले वे इसे 6 जनवरी को मनाते थे । मिथराइयों के अनुसार सूर्य का जन्म दिन 25 दिसंबर था, जिसे वे धूमधाम से मनाते थे ।

हर मिथक में सूर्य योद्धाओं के देवता रहे हैं । प्राचीन मिस्री चित्रों में शरद के सूर्य के सिर पर सिर्फ एक केश को दिखाया गया है । क्योंकि वे इस ऋतु में कमजोर पड़ जाते हैं । लेकिन गर्मी के मौसम में ताकतवर हो जाते हैं । सिर मुड़ाने की प्रथा भी प्राचीन काल से चली आ रही है । पहले सूर्य की प्रतिष्ठा में सिर मुड़ाया जाता था ।

ऋग्वेद ने सूर्य को ईश्वर की सबसे खूबसूरत दुनिया कहते हुए सलाह दी है कि, ''इस दैविक सूर्य की संप्रभुता का हम आदर करें ।''

वेदों में सूर्य को ऊर्जा और प्रकाश का अक्षय भंडार और धरती पर जीवन का संचालक बताया गया है । रामायण में अगस्त्य मुनि ने राम से कहा था कि वे 'आदित्य हृदय' स्तोत्र के जरिए सूर्य की उपासना करे । सम्राट हर्षवर्धन के दरबारी कवि मयूर ने सूर्य की प्रशंसा में 'सूर्य शतकम्'

की रचना की थी, जिसका पाठ करने से उसका अंधापन खत्म हो गया था ।

प्राचीन भारत में सूर्य मंदिरों को आदित्य गृह कहा जाता था । ई० पू० 400 में तेसिअस नामक यात्री भारत आया था । उसने पश्चिम भारत में सूर्य पूजा का विवरण दिया है । श्रीनगर के पास मार्तंड में एक प्राचीन सूर्य मंदिर के भग्नावशेष मिले हैं । पाकिस्तान के मुल्तान में भी एक सूर्य मंदिर के खंडहर हैं । दक्षिण भारत के मंदिरों में मौजूद तालाब को सूर्य तीर्थम् या सूर्य पुष्करिणी कहा जाता है ।

सूर्य की विधिवत पूजा अब सिर्फ बिहार में ही बड़े पैमाने पर होती है । दीपावली के छठे दिन षष्ठी व्रत या छठ के नाम से लोकप्रिय यह पूजा काफी कड़े व्रत और नियमों के साथ की जाती है । नियम में प्रवेश चौथे दिन, पाँचवें दिन लोहंडा, छठे दिन शाम के वक्त डूबते सूर्य को पहला अर्घ्य और सातवें दिन सुबह को उगते सूर्य को दूसरा और अंतिम अर्घ्य के साथ यह त्योहार संपन्न होता है । अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए सूर्य को नमस्कार करने का यह अनूठा पर्व आर्य और वैदिक संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए हुए है ।

वैसे आर्य नाम से एक जाति के कुछ लोग अभी भी अफगानिस्तान में मौजूद हैं, जो इंद्र, अग्नि, सूर्य की वैदिक रीति से ही उपासना करते हैं । अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर फ्रंटियर के पास काफिरिस्तान नामक इलाका है, जहाँ अभी भी आर्यों की आबादी रहती है जो सूर्य की पूजा करती है ।

□□□

अभ्यास

पाठ के साथ

1. वेदों में सूर्य के संबंध में क्या कहा गया है ? पाठ के आधार पर उत्तर दें ।
2. भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार सूर्य के माता-पिता कौन थे ? पाठ में सूर्य के जन्म के संबंध में दो कथाओं का उल्लेख है, उन्हें संक्षेप में लिखें ।
3. दिन और रात किसके प्रतीक हैं ?
4. संज्ञा कौन थी ? छाया से उसका क्या संबंध है ? दोनों की संतानों के नाम लिखें ।
5. विश्वकर्मा ने सूर्य की आभा के अंश को काट कर किन वस्तुओं का निर्माण किया ?
6. वर्ष के बारहों महीनों के आधार पर सूर्य के अलग-अलग नाम हैं । महीनों के नाम के साथ उन नामों को लिखें । साथ ही इन बारहों महीनों के तद्भव-देसी नाम भी लिखें ।
7. पाठ में सूर्य के कई कार्यों की जानकारी दी गई है । उन कार्यों के आधार पर सूर्य के अलग-अलग नाम हैं, इनकी सूची बनाएँ ।

8. विभिन्न देशों और समाजों में सूर्य के अलग-अलग नाम प्रचलित हैं । नीचे एक सूची दी जा रही है उसमें रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

देश/समाज	सूर्य के नाम
प्राचीन मिस्र	....
फारस	....
असीरिया	....
फिनिशिया	....

9. रोम सम्राट ऑरीलिया ने सूर्य मंदिर को क्यों नष्ट नहीं किया ?
10. मिथराइयों के अनुसार सूर्य का जन्म दिवस कब है ?
11. प्राचीन मिस्री चित्रों में शरद के सूर्य के सिर पर सिर्फ एक केश दिखाया जाता है । क्यों ?
12. सूर्य मंदिर के अवशेष भारत-पाकिस्तान में कहाँ-कहाँ मिले हैं ?
13. मैक्समूलर ने सूर्य के संबंध में क्या लिखा है ?
14. राम ने शक्ति प्राप्त करने के लिए किस स्तोत्र का पाठ किया था ?
15. अद्वय और सदावृध शब्दों के क्या अर्थ हैं ?
16. मयूर कवि कौन थे ? उनकी रचना का क्या नाम है ?

पाठ के आस-पास

1. प्रतीक का क्या अर्थ है ? प्रतीक और बिंब में क्या अंतर होता है ?
2. पाठ में गरुड़, खिले हुए कमल और स्वस्तिक को सूर्य के प्रतीक के रूप में स्वीकारा गया है । आप इनमें सबसे उचित प्रतीक किसे मानते हैं और क्यों ?
3. वेद चार हैं । इनके नाम और वर्ण्य-विषयों के संबंध में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
4. मिथक का क्या अर्थ है ?
5. विश्व के मानचित्र पर अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर फ्रंटियर के पास काफिरिस्तान को चिह्नित करने का प्रयास करें । इसमें अपने इतिहास-भूगोल के शिक्षकों की मदद लें ।
6. बिहार में सूर्य पूजा का प्रसिद्ध स्थल कहाँ है ? वहाँ की शैक्षणिक यात्रा करें ।
7. छठ पर्व बिहार का सबसे बड़ा पर्व है । यह सूर्योपासना का पर्व है । इस विषय पर अपने अनुभव के आधार पर 300 शब्दों में एक निबंध लिखें https://www.evidyarthi.in/
8. श्याम बेनेगल की फिल्म 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का कैसेट उपलब्ध कर इस फिल्म को अपने परिवार के साथ देखें और इसके कथानक पर विचार करें ।
9. सूर्योदय तथा सूर्यास्त का अवलोकन करें और उसका अपने शब्दों में चित्रण करें ।
10. मैक्समूलर कौन थे ? अपने शिक्षक से उनके बारे में जानकारी प्राप्त करें ।
11. जिन देशों के नाम पाठ में आए हैं उन्हें विश्व के मानचित्र पर खोजें । उनमें कई नाम ऐतिहासिक हैं । शिक्षक की सहायता से उन्हें आधुनिक नाम के साथ पहचानें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   सूर्य, घोड़ा, धरती, दिन, रात, तालाब
2. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय निर्दिष्ट करें –
   प्रतिनिधित्व, पौराणिक, प्रसन्नता, वैज्ञानिक, स्वस्तिक, दैविक
3. निम्नलिखित शब्दों के समास-विग्रह करें –
   महिमामंडित, जीवन-चक्र, त्रिदेव, सूर्यपूजा, धीरे-धीरे, सूर्यवंश
4. इस पाठ में बहुत सारे संज्ञा पद हैं । संज्ञा के विभिन्न भेदों को ध्यान में रखकर प्रत्येक भेद के तीन-तीन उदाहरण चुनकर लिखें ।
5. पाठ में आए मिथरा, हवर, अहुर शब्दों के समरूप क्रमशः हैं– मित्र, स्वर और असुर । इनमें असुर शब्द प्राचीन वैदिक भाषा में देवता के लिए प्रयुक्त था जो अब बदलकर राक्षसों के लिए प्रयुक्त होने लगा है । आप ऐसे तीन शब्दों को खोजें जिनका अर्थ बदल गया हो ?

शब्द निधि

लीग	:	स्थल पर तीन मील और समुद्र पर लगभग साढ़े तीन मील की नाप
परित्याग	:	छोड़ देना
बखूबी	:	विशेषताओं के साथ
सृजन	:	निर्माण
सारथि	:	रथ हाँकने वाला
अंश	:	हिस्सा
स्कंद	:	कंधा
उत्प्रेरित	:	बढ़ावा देना
स्वस्तिक	:	एक प्रकार का प्रतीक (卐)
संप्रदाय	:	किसी मत के अनुयायियों की मंडली
पुष्करिणी	:	छोटा तालाब
अर्घ्य	:	समर्पण
अक्षुण्ण	:	सुरक्षित
जेंद अवेस्ता	:	प्राचीन फारसी धर्म ग्रंथ जिसकी भाषा वेदों से मिलती-जुलती है ।